Shri Bhuvaneshvari Pratahsmaranam

श्रीभुवनेश्वरी प्रातःस्मरणम्

Document Information

Text title : bhuvaneshvarIprAtaHsmaraNam

File name : bhuvaneshvarIprAtaHsmaraNam.itx

Category : devii, devI, dashamahAvidyA, suprabhAta

Location : doc_devii

Proofread by : Ganesh Kandu kanduganesh at gmail.com, NA

Latest update : February 2, 2019

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

February 2, 2024

sanskritdocuments.org

श्रीभुवनेश्वरी प्रातःस्मरणम्

उद्यद्दिन-द्यु तिमिन्दु-किरीटां, तुङ्ग-कुचां नयन-त्रय-युक्ताम् ।
स्मेरामभय-वराङ्कुश-पाशां, प्रातः स्मरामि श्रीभुवनेश्वरीम् ॥ १॥

प्रातः-कालीन सूर्य की कान्ति के समान आभावाली, मुकुट पर चन्द्रमावाली,
हँस-मुखी, अभय-वर-अङ्कुश-पाश-धारिणी, श्री भुवनेश्वरी
को मैं प्रातःकाल स्मरण करता हूँ ॥ १॥

सिन्दूरारुण-विग्रहा त्रि-नयनां माणिक्य-मौलि-स्फुरत्
तारा-नायक-शेखरां स्मित-मुखीमापीन-वक्षो-रुहाम् ।
पाणिभ्यामलि-पूर्ण-रत्न-चषकं संविभ्रतीं शाश्वतीम्,
प्रातः स्मरामि रत्न-घटस्थ-मध्य-चरणां पराम्बिकाम् ॥ २॥

सिन्दूर के समान लाल शरीरवाली, त्रिनेत्रा, माणिक्यों से चमकते
मुकुटवाली, चन्द्र-चूडा, हँसमुखी आपीन-वक्षोरुहा, दोनो हाथों
में सुरा-पूर्ण रत्न-जटित पात्र-धारिणी, रत्न-जटित घण्टो के मध्य
में चरण रखनेवाली पराम्बिका को मैं प्रातःकाल स्मरण करता हूँ ॥ २॥

श्यामाङ्गीं शशि-शेखरां निज-करैर्नीतं च रक्तोत्पलम्,
रत्नाढ्य-चषकं गुणं भय-हरं संविभ्रतीं शाश्वतीम् ।
भुक्ता-हार-लसत्-पयोधर-नतां नेत्र-त्रयोल्लासिनीम्,
प्रातः स्मरामि भुवनां सुर-पूजितां रक्ताम्बुज-स्थिताम् ॥ ३॥

श्यामाङ्गी, चन्द्र-शेखरा, हाथों में रक्त-कमल-रत्न-जटित
पान-पात्र, पाश और अभय-धारिणी, मोतियों के हार से
सुशोभित-पयोधरों से विनम्रा, तीन नेत्रों से उल्लास-पूर्णा,
रक्त-कमल पर विराजिता श्री भुवना देवी को मैं प्रातःकाल स्मरण
करता हूँ ॥ ३॥

उद्यच्चन्द्र-सहस्त्र-रश्मि-सदृशीं वह्नीन्दु-सूर्येक्षणाम्,

माध्वी-विन्दु-विघूर्णितेक्षण-युगां वीणा-रवत्याकुलाम् ।
माला-पुस्तक-सिन्धु-पात्र-कमलं दोर्भिर्वहन्तीं मुदा,
प्रातः स्मरामि भुवनेश्वरीं सर्वादि-देवैः सदा स्तुताम् ॥ ४॥

उदीयमान, चन्द्रमा की सहस्र किरणों की जैसी आभावाली,
अग्नि-चन्द्र-सूर्य-रूपी तीन नेत्र-धारिणी माध्वीक-मद्य के
विन्दु-ग्रहण से चञ्चल नेत्रोंवाली, वीणा-वादन-तत्परा,
माला-पुस्तक-पान-पात्र और कमल-हस्ता सभी देवों द्वारा सदैव
संस्तुता भुवनेश्वरी को मैं प्रातःकाल स्मरण करता हूँ ॥ ४॥

सरोज-नयनां चलत्-कनक-कुण्डलां शैशवीं,
धनुर्जप-वटी-करामुदित-सूर्य-कोटि-प्रभाम् ।
शशाङ्क-कृत-शेखरां शव-शरीर-संस्थां शिवाम्,
प्रातः स्मरामि भुवनेश्वरीं शत्रु-गति-स्तम्भिनीम् ॥ ५॥

कमल-नयना, चञ्चलस्वर्णकुण्डल-धारिणी,
धनुष-जप-माला-हस्ता, उदीयमान सूर्य जैसी कान्तिवाली,
चन्द्र-शेखरा, शवासीना, शत्रु-गति को स्तम्भित करनेवाली शिवा
भुवनेश्वरी को मैं प्रातःकाल स्मरण करता हूँ ॥ ५॥

वीणा-वादन-तत्परां त्रि-नयनां त्रैलोक्य-रक्षा-पराम्,
माध्वी-पान-परायणां शव-गतां मन्द-स्मितां चिन्मयीम् ।
माया-वीजविभूषितां शशि-कला चूडां च सत्कुण्डलाम्,
प्रातः स्मरामि भुवनेश्वरीं भगवतीं सर्वैः संस्तुताम् ॥ ६॥

वीणा बजाती हुई, त्रिनेत्रा, तीनों लोकों की रक्षा में तत्परा,
माध्वीक-पान-परायणा, शवासीना, मन्द-मन्द मुस्कुरानेवाली,
चिन्मयो, मायावीज-विभूषिता, चन्द्रकला से युक्त चूडावाली,
सुन्दर-कुण्डल-धारिणी, सभी प्राणियों द्वारा प्रार्थिता भगवती
भुवनेश्वरी को मैं प्रातःकाल स्मरण करता हूँ ॥ ६॥

इति श्रीभुवनेश्वरीप्रातःस्मरणं सम्पूर्णम् ।

Proofread by Ganesh Kandu kanduganesh at gmail.com, NA

Shri Bhuvaneshvari Pratahsmaranam

pdf was typeset on February 2, 2024

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*